

(E - 104) म्हारा ऋषभ जिनेश्वर

म्हारा ऋषभ जिनेश्वर नैया म्हारी, भवसे पार लगाजो।
खेवट बनकर शीघ्र खबर ल्यो, अब मत देर लगाजो। टेक।
इस अपार भवसिंधु को तिरना चाहुं और,
नैया म्हारी झरझरी, पवन चले झकझोर,
म्हारी नैया को इस फंदासूं प्रभु आकर थे ही छुडाजो।...म्हा. 9
क्रोध मान मद लोभ ये सब ही को कर दूर,
भव सागर को तीरतें तुमही हो मम मित्र,
ओ हितकारी भगवन म्हारो धन चारित्र बचाजो।...म्हा. 2
सब भक्तोंकी टेर सुन, राखी छो थे लाज,
आयो हूं अब शरणमें सारो म्हारो काज,
सकल तिमिर को दूर भगाकर ज्ञान को दीप जगाजो।...म्हा. 3